श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

प्यारे भाइयों और बहनों,

प्रणाम,

छुट्टियों के मौसम में देश भर के आश्रमों में बच्चों एवं युवाओं के शिविर लगाये गये तथा उनकी गतिविधियों से खूब चहल–पहल रही। हर एक ज़ोन के कुछ चयनित आश्रमों में पूज्य बाबूजी के जन्मदिवस समारोह का आयोजन किया गया । मालिक के 50 दिवसीय CIS एवं यूरोपीय देशों के दौरे ने एक बार फ़िर हमें दिखाया कि वह लोगों को सहज मार्ग रूपी छाते के नीचे इकट्ठा करने के लिये कितना वचनबद्ध हैं । इस सामयिक संस्करण में हमनें उपरोक्त कुछ वृत्तांत तथा लखनऊ में मालिक के जन्मदिवस समारोह की तैयारियों के बारे में बताने की कोशिश की है ।

सितम्बर संस्करण के लिये संस्मरण भेजने की अंतिम तिथि 10 अगस्त 2008 है । कृपया अपने संस्मरण 100–150 शब्दों में घटना की तस्वीरों के साथ अपने ज़ोनल प्रभारी के माध्यम से भेजें ।

आदर सहित

अप्रैल–मई में मालिक का दौरा

दिल्ली

मालिक 19 अप्रैल को लखनऊ से दिल्ली पहुँचे । गुड़गांव में ज़ोनल आश्रम का नवीकरण खूब उत्साहपूर्वक किया गया तथा मालिक के वहाँ आने से पहले सही समय पर काम पूर्ण हो गया ।

आश्रम का अब एक नया रूप है जिसमें विस्तृत ध्यान–कक्ष, मालिक की कॉटेज, रसोई ब्लॉक, भोजन–कक्ष व एक भंडार घर के साथ, एक नया प्रसाधन ब्लॉक, पक्की सड़कें तथा हरे भरे लॉन हैं । मालिक ने 20 अप्रैल को कॉटेज का उद्घाटन किया तथा दो पौधे लगाए ।

सत्संग के बाद मालिक ने अभ्यासियों के संग समय बिताया । उन्होंने कुछ नवजात शिशुओं का नामकरण किया, बच्चों में मिठाई बांटी तथा वॉलंटीयरज़ को उपहार दिये । बहन रंजना के भजनों ने दिन–भर की गतिविधियों को चार–चाँद लगा दिये ।

दुबई

दुबई मालिक की यात्रा का एक अहं पड़ाव बन गया है । इसकी वजह यह है कि मालिक अपने गंतव्य स्थानों तक जाने के लिये अपेक्षाकृत छोटी उड़ानों को प्राथमिकता देते हैं ।

22 अप्रैल को पूज्य मालिक, भाई अजय भट्टर तथा लगभग 25 अभ्यासियों के साथ विमान द्वारा दिल्ली से दुबई के लिये रवाना हुए । वह एक अभ्यासी के घर पर रुके और उन्होंने नीचे स्थित सामुदायिक भवन में सत्संग करवाए । गुरुदेव कुछ समय के लिये अबु धाबी केन्द्र में भी गये । 25 अप्रैल को पूरे UAE से 350 अभ्यासी दुबई के इरानियन क्लॅब में एकत्रित हुए जहाँ मालिक ने सत्संग करवाया । मालिक ने वहाँ के प्रशिक्षकों के काम की भरपूर सराहना की जैसा कि उन्होंने एक घंटे भर की पूजा की गुणवत्ता से देखा । मालिक 26 अप्रैल को मॉस्को के लिये रवाना हो गये ।

CIS के अभ्यासियों पर अपनी छटा बिखेरते हुए

मालिक लगभग एक दशक के बाद रूस तथा बेलारस गये और CIS क्षेत्र (पूर्व USSR–रूसी भाषा बोलने वाले देश) के अभ्यासियों को खुशी से गदगद कर दिया । मॉस्को में मालिक कलिज़्मा पेनशनाट में आयोजित पूज्य बाबूजी महाराज के जन्मदिवस समारोह में शामिल हुए । गुरुदेव वहाँ एकत्रित 450 अभ्यासियों के साथ प्रसन्न थे । उनकी वृहद् कार्य श्रृंखला और यात्रा की थकान के बावजूद वह प्रसन्नचित थे । मालिक अभ्यासियों से रूसी भाषा में बातचीत करते रहे और सहज मार्ग साधना व उसकी बारीकियों के बारे में समझाते रहे । उन्होंने मॉस्को में एक ध्यान–कक्ष के विचार को प्रारूप दिया तथा स्वयं उसके लिये फ़ंड इकट्ठा किये ।

मॉस्को में एक सप्ताह बिताने के बाद , मालिक ने अगले पांच दिन मिंस्क (बेलारस) में 250 अभ्यासियों की स्नेहमय संगत में बिताए । उन्होंने वहाँ एक योग केन्द्र की स्थापना की जिसका निर्माण भाई इगोर ओनिशेंको करेंगे । उसको मिंस्क केन्द्र, सत्संग एवं मिशन की अन्य गतिविधियों के लिये उपयोग करेगा ।

सेहत ठीक न होने की वजह से मालिक मॉस्को में अभ्यासियों द्वारा आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो सके । मिंस्क आश्रम में सुहावनी धूप के तले बेलारस के अभ्यासियों ने उनके सामने गायन एवं नृत्य प्रस्तुत करके इस कमी को पूरा करने की कोशिश की । मालिक की यात्रा के दौरान वहाँ अच्छी धूप खिली रही , ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति ने ही मालिक की रूसी भाषी देशों में उनके प्रियजनों के बीच उपस्थिति की परिकल्पना की हो ।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

यूरोपीय देशों की ओर

लाट्विया, बाल्टिक देशों में से एक, पूर्व सोवियत गणराज्य है जो अब यूरोपीय सामुदाय का हिस्सा है। उसकी राजधानी रीगा में, जो कि समुद्र के किनारे बसे रिसोर्ट के लिये जाना जाता है, सहज मार्ग का एक केन्द्र है । वहाँ लगभग 40 अभ्यासी हैं । पूजा के लिये एक ध्यान–कक्ष है । 6 मई को मालिक मिंस्क (बेलारुस) से दो दिन के लिये रीगा चले गये । वहाँ मालिक समुद्र के सामने स्थित एक होटल में ठहरे । वहाँ उन्होंने दो सत्संग करवाये ।

मालिक को पीठ व पैरों में तेज़ दर्द हो रहा था फ़िर भी उन्होंने अपना यूरोप का दौरा जारी रखने का निश्चय किया । जिसका तर्क उन्होंने यह दिया: एक व्यक्ति की तकलीफ़ से सभी क्यों परेशानी सहें ?

उनका स्वास्थ्य ठीक न होने की वजह से मालिक ने तीन सप्ताह के लिये व्राड्ज़ सेंदे, डेनमार्क आश्रम के लिये प्रस्थान किया । वहाँ कुछ ही दिनों में उनके स्वास्थ्य में सुधार हो गया और लगभग 1200 यूरोपीय अभ्यासी मालिक के साथ रहने के लिये बैचेज़ में वहाँ आने लगे । वराड्ज़ मालिक के लिये दूसरा घर ही है । गुरुदेव वहाँ अक्सर आसपास की जगहों, आश्रम से रसोई–घर, भोजन–कक्ष और ध्यान–कक्ष तक टहलने के लिये जाया करते थे । जब कभी भी वह अपनी कॉटेज के पिछले हिस्से से सत्संग करवाते, अभ्यासी आस पास ज़मीन पर बैठ जाते ।

मालिक ने वराड्ज़ सेंदे को एक अंतर्राष्ट्रीय आश्रम घोषित किया । इस विषय पर उन्होंने एक छोटी सी वार्ता रिकार्ड की और सभी जगहों से अभ्यासियों, विशेषतः युवाओं को वहाँ आने

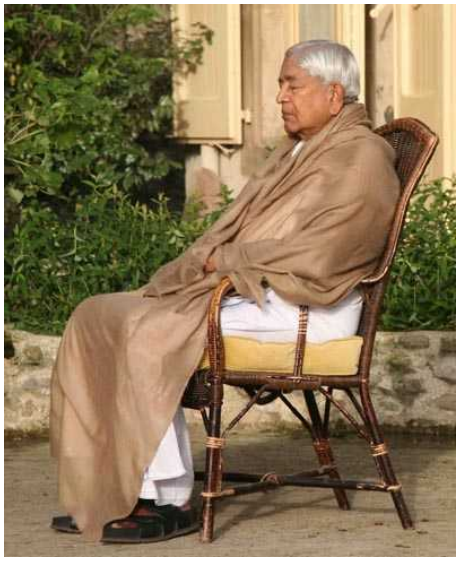

के लिये आमंत्रित किया ।

मालिक लगभग 70 अभ्यासियों के साथ व्राडज़ से 600 कि.मी. दूर पैरिस के लिये रवाना हुए। चार देशों को पार करते हुए 26 मई की सुबह को गुरुदेव पैरिस पहुँचे । वह शहर के एक होटल में रुके और 28 मई को पैरिस आश्रम में उन्होंने 200 अभ्यासियों को सत्संग करवाया ।

मालिक अगले पाँच दिन कैलेट के पहाड़ी इलाके में एक अभ्यासी के घर पर ठहरे जहाँ उनको विश्राम करने का अवसर मिला । लेकिन फ़िर भी वह मोंटपेलियर सेंटर के आश्रम में गये तथा 150 अभ्यासियों को सत्संग करवाया ।

5 जून को मालिक आलप्स की पर्वतश्रृंखला को पार करके और 13 कि.मी. लम्बी सुरंग से निकल कर मिलान (इटली) पहुँचे । रास्ते में वह आस्ता (मिशन के एक केन्द्र) पर रुके जहाँ उन्होंने इटालियन भोजन का आनंद लिया । अगले दिन मालिक ने मिलान में नए लिये गये ध्यान–कक्ष का उद्घाटन किया और उस दिन तथा अगले दिन वहाँ सत्संग करवाया ।

8 जून 2008 को, मालिक ने अपना CIS व यूरोपीय देशों का ऐतिहासिक दौरा समाप्त किया तथा दुबई के लिये उड़ान भरी, जहाँ से वह 15 जून को भारत वापिस आयें।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

SMSF रिट्रीट सेंटर, मलमपुज़ा

रिट्रीट सेंटर मलमपुज़ा, केरल ने 14 अप्रैल 2008 से कार्य आरम्भ कर दिया है । यह मिशन का प्रथम रिट्रीट सेंटर है, पुणे में दूसरा भी क्रियाशील हो गया है ।

इस केन्द्र पर 48 अभ्यासी रह सकते हैं । आवास भवन को दो खण्डों में विभाजित किया गया है, एक महिलाओं के लिये और दूसरा पुरूषों के लिये । जहाँ तक हो सके वृद्ध लोगों को भू–तल पर ठहराया जाता है । यहाँ पर रुकने वालों को चारपाई, गद्दा और चादर उपलब्ध कराई जाती है । यहाँ पर रुकने का कोई शुल्क नहीं है । एक व्यक्ति 3 से 30 दिन तक यहाँ रह सकता हैं । पति और पत्नि एक ही समय पर यहाँ नहीं रुक सकते । बच्चों को यहाँ रुकने की अनुमति नहीं है ।

यह केन्द्र चेम्बाना बस स्टॉप के पास कावा नामक जगह पर स्थित है । यह मलमपुज़ा बस स्टॉप से लगभग 6 कि.मी. दूर है । यह पालाकाड़ जंक्शन रेलवे स्टेशन से लगभग 15 कि.मी. , पालाकाड़ कस्बे से 20 कि.मी. और कोयंबतूर हवाई अड्डे से 55 कि.मी. दूर है । पालाकाड़ से मलमपुज़ा लगातार बसें चलती हैं । मलमपुज़ा से सेंटर तक जाने के लिये टैक्सी, जीप और ऑटोरिक्शा उपलब्ध हैं । मलमपुज़ा से कावा के लिये बस की सुविधा है परंतु यह बहुत यदा – कदा ही है । जो बस से यात्रा करें वे चेम्बाना स्टॉप पर उतर कर पैदल सेंटर तक आ सकते हैं । यात्रियों की सुविधा के लिये चेम्बाना बस स्टॉप पर SMSF का बोर्ड लगाया गया है । पहचान के तौर पर चेम्बाना बस स्टॉप पर पावर ट्रांसफ़ारमर को देखा जा सकता है ।

अपने निवास की तारीख तय करने के लिये इस वेबसाइट पर जाएं

http://sahajmarg.org/welcome/retreat/index.html

"ऑर मास्टर" – मॉस्को में जारी

एक पुस्तक जिसका शीर्षक है "ऑर मास्टर" उसको पूज्य मालिक के द्वारा मॉस्को में जारी किया गया । इस पुस्तक में उन अभ्यासियों के द्वारा लिखे गये संस्मरणों का संग्रह है जो कई वर्षों से मालिक के साथ हैं उन्होंने इसमें अपने यादगार अनुभवों का वर्णन किया है ।

लखनऊ

16 अप्रैल को मालिक लखनऊ गये और आनंदकारी वातावरण में वहाँ नवनिर्मित मालिक की कॉटेज का उद्घाटन किया । दो एकड़ के क्षेत्र में बनाई गई कॉटेज के चारों तरफ़ काफ़ी हरियाली है । इस समारोह में कई शहरों से आये लगभग 4000 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए ।

जुलाई समारोह

हम पाठकों को आने वाले पूज्य मालिक की 81वीं वर्षगांठ समारोह जोकि लखनऊ, उ. प्र. में 23 से 25 जुलाई को मनाया जायेगा के बारे में याद दिलाना चाहेंगे । समारोह की तैयारियां ज़ोरों से चल रही हैं । अब तक देश भर से लगभग 25000 लोग समारोह में शामिल होने के लिये रजिस्टर करवा चुके हैं । लगभग 35000 लोगों के आने की उम्मीद है ।

लखनऊ आश्रम सीतापुर हरदोई बाइ–पास पर, इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ़ मेनेजमेंट के पास स्थित है । इसे 100 एकड़ ज़मीन पर बनाया गया है । यह लखनऊ रेलवे स्टेशन से 20 कि.मी. और हवाई अड्डे से 25 कि.मी. दूर है । सभी अभ्यासियों के लिये वहाँ से समारोह स्थल तक आने–जाने की सुविधा का इंतज़ाम किया गया है ।

जुलाई में यहाँ काफ़ी गर्मी और नमी का मौसम होगा इसलिये सभी अभ्यासियों से निवेदन है कि वे अपनी सुविधा के लिये एक छाता या बरसाती और हाथ का पंखा अपने साथ लाएं । समारोह स्थल पर जलरोधक खेमे 150,000 वर्गफ़ुट के ध्यान–कक्ष और 100,000 वर्गफ़ुट की रसोई व भोजन–कक्ष पर लगाये जायेंगे । आवश्यक सुविधाएं जैसे अस्पताल गाड़ी सहित एक मेडिकल सेंटर, बैंकिंग तथा इंटरनेट की सुविधा, एक विशाल कैंटीन , बच्चों का स्थान, पुस्तक स्टोर और रजिस्ट्रेशन काउंटर वहाँ पर सुलभ करवाई जाएंगी ।

सभी अभ्यासी भाइयों और बहनों के लिये सामान्य आवास निःशुल्क होगा । बिछौने वहाँ पर विक्रय के आधार पर दिये जाएंगे तथा सीमित संख्या में प्रथम पहुंचने वालों को किराए पर भी उपलब्ध होंगे । कमफ़र्ट डॉर्मिटरी भी बिछौना, गद्दा, तकिया, चादर व मच्छरदानी के साथ उपलब्ध होगी ।

समारोह के पहले और बाद में काम करने के लिये बहुत से वॉलंटियर्ज़ की ज़रूरत होगी । जैसाकि हमें 3000 से अधिक बच्चों के आने की अपेक्षा है , उनका ध्यान रखने के लिये हमें प्रशिक्षित वॉलंटियर्ज़ की आवश्यकता होगी । हम अपने सभी केन्द्रों से निवेदन करते हैं कि वॉलंटियर्ज़ के नाम इस पते पर मेल कर दें mehrotrashyamji@yahoo.co.in

हमें इस समारोह को सफ़ल बनाने के लिये आपके भरपूर सहयोग एवं सहायता की आवश्यकता है । आओ, हम सब मिल कर इस शुभ अवसर को यादगार बनाएं ।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

बाबूजी महाराज का १०९ वां वर्षगांठ समारोह

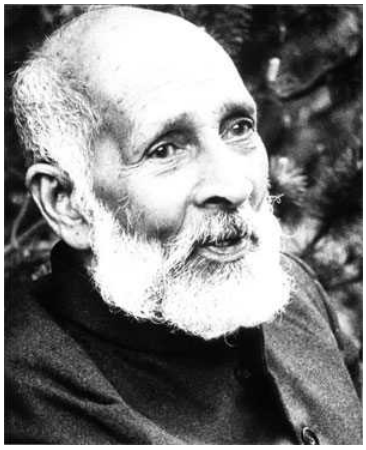

मैसूर

३० अप्रैल को पूज्य बाबूजी महाराज के वर्षगांठ समारोह में मैसूर, हासन, हुन्सूर, चिकमगलूर, कोल्लेगाल, बेंगलूर, पेरियपटना, कुशालनगर, टी. नरसिपुरा और चामराजनगर केन्द्रों से लगभग ४५० अभ्यासियों के सम्मिलित होने से मैसूर आश्रम सजीव हो उठा।

सुबह सत्संग के बाद दिन भर कार्यक्रम चले। बाबूजी महाराज के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर आधारित एक वीडिओ दिखाया गया। बहन कल्पना ने पूज्य बाबूजी की तस्वीरों का संग्रह प्रस्तुत किया। हुन्सूर के अभ्यासियों ने इसी विषय पर एक प्रश्नावली का आयोजन किया। उसके बाद बच्चों ने प्रार्थना, गीत, नाटक और वार्ताएं प्रस्तुत कीं। बच्चों का मालिक एवं पद्धति के विषय में इतना प्रभावपूर्ण ढंग से बोलना दिलों को छू गया।

पूरे वातावरण में मालिक की उपस्थिति महसूस की जा सकती थी। समारोह में सम्मिलित हो कर सभी ने आध्यात्मिक लाभ उठाया।

उत्तराखंड

बाबूजी महाराज के जन्मोत्सव पर हिमालय की पर्वतश्रंखला के बीच स्थित पहाड़ी क्षेत्र मानो उनके नाम का निःशब्द गुंजन कर रहा हो। सतकोल आश्रम में आस–पास के केन्द्रों से लगभग १४० अभ्यासी एकत्रित हुए और पूजनीय बाबूजी महाराज का जन्मदिवस पूरी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में मिशन के केन्द्र पर सत्संग करवाये गये तथा बाबूजी महाराज के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर आधारित एक वीडिओ दिखाया गया। अभ्यासियों ने भजन गाये और कुछ वार्ताएं प्रस्तुत की। रुड़की, पिथोरागड़, हल्दवानी और काशीपुर केन्द्रों में भी बाबूजी महाराज का जन्मोत्सव पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया।

कोल्हापुर

कोल्हापुर, मिराज, सतारा और पुणे केन्द्रों से लोग बाबूजी महाराज का जन्मदिवस मनाने के लिये एकत्रित हुए। कुछ अभ्यासी बेलगाँव, गुलबर्गा और गोंडिया केन्द्रों से भी वहाँ पहुँचे।

सत्संग के अलावा बाबूजी महाराज के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर आधारित वार्ताएं प्रस्तुत की गईं। बहन नूरी और भाई गोपाल ने परम पूजनीय लालाजी महाराज के संरक्षण में बाबूजी के आध्यात्मिक और भौतिक जीवन के विकास पर प्रकाश डाला। बहन लता पाटिल ने बाबूजी और उनके प्रिय अनुयायी, हमारे गुरुदेव के बीच संबंधों के बारे में बतलाया। भाई ए. एन. कुलकर्णी, बहन अरुंधती काले और भाई सुधाकर जोशी ने बाबूजी के साथ अपने कुछ संस्मरण सुनाये।

बहन स्नेहा राजूरिकर ने भजन प्रस्तुत किये। सभी केन्द्रों से अभ्यासियों ने पूरी लगन से दिन भर के कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

वडोदरा

वडोदरा केन्द्र में पूरे गुजरात ज़ोन के अभ्यासियों के लिये समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग १३०० अभ्यासी सम्मिलित हुए। प्रकृति ने वर्षा की फ़ुहार के रूप में अपनी कृपा बरसाई। गहराई में ले जाने वाले सत्संग के बाद सी डी – "मास्टर्ज़ चॉयस" के म्यूज़िक ने सब के दिलों को छू लिया। पूज्य मालिक की गोवा में हाल ही में दी गई वार्ता को संदेश के रूप में अंग्रेज़ी और गुजराती भाषा में पढ़ा गया।

भाई सुरेश ने इस बात पर बल दिया कि मालिक के साथ स्थाई रूप से आंतरिक संबंध स्थापित किया जाये ताकि उन की उपस्थिति को हर समय महसूस किया जा सके। उन्होंने सभी को जीवन में आध्यात्मिकता को प्राथमिकता देने और शीघ्र विकास के लिये अपने आध्यात्मिक ध्येय को पूरे उत्साह से प्राप्त करने के लिये कहा। भाई राजेन्द्र राठौड़ ने 'वॉलंटियरशिप– एन आइडियल वे टू प्रोग्रेस' विषय पर वार्ता दी और अभ्यासियों को जुलाई २००८ के समारोह में स्वयंसेवक के रूप में भाग लेने के लिये प्रेरित किया।

भोजन के बाद, ध्यान–कक्ष में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसे आनंद, अंकलेश्वर, भरूच, भावनगर और वडोदरा केन्द्रों के बच्चों और अभ्यासियों ने प्रस्तुत किया।

बहन सुमन दवे ने "सहज मार्ग के विकास में औरतों की भूमिका", भाई भरत तन्ना ने "साधना में नियमितता" और भाई पुनीत लालभाई ने "सहज मार्ग में युवाओं की भूमिका" पर व्याख्यान दिये। इसके बाद बाबूजी महाराज की यूरोप की यात्रा का वीडिओ दिखाया गया।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

ओपन हाउस सत्र

मंगलूर

3 अप्रैल 2008 को मंगलूर के चेतना स्कूल में एक ओपन हाउस का आयोजन किया गया। यह विशेषतः अभिभावकों के लिये आयोजित किया गया। डा. सबिता, स्कूल की ट्रस्टी, और बहन गीता, वहाँ की सेंटर इंचार्ज ने इस कार्यक्रम का आयोजन करने में बहुत सहायता की।

बहन वसन्ता कुमारी, मिशन की एक प्रशिक्षक व कॉलेज की अध्यापिका ने श्रोताओं को संबोधित किया। उसके बाद एक संवादात्मक सत्र हुआ। प्रेम और सहनशीलता से लोगों को समझना तथा बच्चों को उनकी ताकत एवं कमज़ोरी के साथ स्वीकार करना इत्यादि पहलुओं के बारे में विचार किया गया। जीवन के प्रति सही रवैये का विकास करने में किस प्रकार से आध्यात्मिकता सहायता करती है इसकी व्याख्या की गई। वहाँ उपस्थित अभिभावकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

कारकळा

18 मई 2008 को आनेकेर, कारकळा में भाई रामानन्द भट्ट के घर पर एक ओपन हाउस का आयोजन किया गया जिसमें 20 लोगों ने भाग लिया। मंगलूर की बहन पुष्पा ने सहज मार्ग पद्धति एवं संतुलित जीवन जीने में सहज मार्ग की भूमिका के बारे में प्रारंभिक वार्ता दी। उन्होंने वैदिक साहित्य, भागवद् गीता, बौद्ध धर्म और कुछ धार्मिक गीतों का हवाला देते हुए बहुत अच्छे उदाहरणों के साथ वार्ता प्रस्तुत की।

उडुपी

रोबोसॉफ़्ट कॉनफ़रेंस हॉल में 'मेडिटेशन फ़ॉर बेटर लिविंग' पर दिये गये प्रस्तुतिकरण में रोबोसॉफ़्ट के 100 कर्मचारी उपस्थित थे। भाई रामानन्द भट्ट ने सहज मार्ग के बारे में बतलाया। भाई मोहन ने बेहतर जीवन जीने में सहज मार्ग की भूमिका के बारे में विस्तार से समझाया। भाई मोहन ने ध्यान, इसका इतिहास, आज के परिपेक्ष में इसकी आवश्यकता तथा मानव विकास और उसमें सहज मार्ग के रूपांतरित राज योग की भूमिका के बारे में बताया।

वहाँ उपस्थित लोगों में से 44 लोग साधना शुरु करने के लिये तैयार थे। इसलिये 9 जून से उनकी सिटिंग शुरु की जायेगी।

एक कदम आगे की ओर

दावनगेरे केन्द्र, कर्नाटक

पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद और अनुमति से दावनगेरे केन्द्र ने 24 जनवरी 2008 को, दावनगेरे और हरिहर कस्बे से लगभग 8 कि. मी. दूर डोद्दाबत्ती गांव में 2 एकड़ कृषि भूमि खरीदी।

उन दोनों केन्द्रों के लिये वहाँ पर एक आश्रम बनाया जायेगा। इसके अलावा और ढ़ाई एकड़ ज़मीन अभ्यासियों के आवास के लिये ली गई है।

यह तस्वीर ज़मीन के पास स्थित एक पहाड़ी से ली गई है। लाल चिन्ह वाले हिस्सों में 1. आश्रम की ज़मीन और 2. अभ्यासियों के आवास के लिये ली गई ज़मीन है।

बाबूजी महाराज ने 6 जुलाई 2003 के संदेश में कहा था "आने वाले दशक में आश्रमों की संख्या बढ़ेगी। हम इस परियोजना की ओर कृपादृष्टि बनाये रखेंगे। बढ़ती ज़रूरतों को पूरा करने के लिये आश्रमों की संख्या बढ़ाने पर विचार करने में ही समझदारी है।"

सोलापुर के अभ्यासियों ने 29 मई को इसी दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया जब उन्होंने आश्रम बनाने के लिये डेढ़ एकड़ ज़मीन खरीद कर मिशन को दान की। यह आश्रम स्थल सोलापुर से 5 कि. मी. दूर अक्कालकोट रोड पर स्थित है।

SRCM के संयुक्त सचिव भाई ए. पी. दुरई और ज़ोनल प्रभारी एस. वैद्य पंजीकरण की औपचारिक्ता के लिये वहाँ उपस्थित थे तथा वे दिन–भर के कार्यक्रमों में भी मौजूद रहे। सोलापुर, बरशी, ओसमानाबाद, लातूर और औसा से 120 अभ्यासी इस अवसर पर एकत्रित हुए। बहन अनुसूया रामचन्द्रन, जोकि वर्षों पहले सोलापुर की प्रथम प्रशिक्षक थी, भी वहाँ मौजूद थीं।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

SUMMER CAMPS

बेंगलूर

3 से 18 वर्ष की आयु के 40 बच्चों ने शनिवार, 24 मई 2008 को बनशंकरी आश्रम में आयोजित एक दिवसीय ग्रीष्म शिविर में हिस्सा लिया। वॉलंटियर तथा अभिभावक भी वहाँ मौजूद थे। बच्चों को आयु अनुसार दो भागों में बांटा गया। शिविर में बहुत सी गतिविधियां आयोजित की गई। बच्चों को अनिर्मित सामग्री दी गई। प्लास्टर ऑफ़ पैरिस से बच्चों के हाथों के साँचे बनाये गये जिस पर बच्चों द्वारा रंग किया गया। बहुत से खेल जैसे क्रिकेट, कुत्ता और हड्डी, 9 x 9 वर्ग तथा कुछ बच्चों द्वारा सुझाये गये खेल खेले गये। VBSE टीम द्वारा एकीकृत दृष्टिकोण से बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने का प्रयत्न किया गया। दिन भर की रोचक एवं शिक्षाप्रद गतिविधियों के साथ, बच्चों के खाने–पीने का खास ध्यान रखते हुए उन्हें ज्यूस, आईसक्रीम तथा फ़ल इत्यादि भी दिये गये।

तिरुवनंतपुरम्

20 अप्रैल को तिरुवनंतपुरम् (केरल) केन्द्र के बच्चों को उनके अभिभावकों के साथ एक दिवसीय कार्यक्रम के लिये आमंत्रित किया गया। हमारे वॉलंटीयरज़ के द्वारा लोगों के घरों में जा कर आमंत्रित करने पर 52 बच्चों ने, जिसमें से केवल 12 अभ्यासियों के परिवारों से थे, उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम की सभी गतिविधियों जैसे कहानी सुनाना, चित्र बनाना, रंग भरना तथा खेलों इत्यादि में भाग लिया। अभ्यासियों के बच्चों ने धन को संचित करके रखने की असारता का वर्णन करते हुए एक मनोहर नाटक प्रस्तुत किया।

दोपहर को सभी को बढ़िया भोजन परोसा गया। जब बच्चे अपनी गतिविधियों में व्यस्त थे उस दौरान अभिभावकों को आध्यात्मिकता और सहज मार्ग ध्यान के बारे में बताया गया। दिन के अंत में, उनमें से बहुत से लोगों ने साधना शुरु करने की उत्सुकता ज़ाहिर की।

अहमदाबाद

अहमदाबाद सेंटर में बच्चों के लिये ग्रीष्म शिविर नियमित रूप से आयोजित किये जा रहे हैं। 26 से 29 मई को चौथी बार ऐसे शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 34 बच्चों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य बच्चों को ऐसा वातावरण देना था जिसमें उनके द्वारा नये मित्र बनाने के अतिरिक्त उनके अन्दर की सृजनात्मक योग्यताओं को निखारा जा सके।

इस सत्र की प्रमुख गतिविधियां थी – सृजनात्मक कहानी लेखन, प्रश्नावली, खज़ाने की तलाश, शिल्पकारी और मिट्टी के बर्तन बनाना इत्यादि। बच्चों ने इसकोन मंदिर, जिसमें पेंटिंग के माध्यम से भगवान कृष्ण के जीवन को दर्शाया गया है, तथा सुंदरवन नेचर पार्क, जहाँ पर उन्होंने सर्पों के जीवन व उनकी आदतों के बारे में जानकारी ली , के भ्रमण का भरपूर आनंद लिया। शिविर के अंतिम दिन उन्होंने बर्तन साफ़ करने में सहायता की तथा खाद्य पदार्थ और जल संसाधनों के संरक्षण के बारे में जानकारी प्राप्त की।

पर्यावरण के बारे में जागरूकता पैदा करना तथा सृजनात्मक कौशल प्राप्त करना इस रूचिकर शिविर के प्रमुख उद्देश्य थे।

नंजनगुड़

नंजनगुड, मैसूर के पास एक छोटा सा कस्बा है। लगातार तीसरे वर्ष यहाँ हमारे वॉलंटियरज़ के द्वारा स्कूल के बच्चों के लिये 13 अप्रैल से एक मास के लिये ग्रीष्म शिविर का आयोजन किया गया। इसे नीलकंठेश्वर एडुकेश्नल सोसाईटी स्कूल में आयोजित किया गया। सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक चलने वाले इस शिविर में दिन की शुरुआत मिशन की प्रार्थना से की जाती थी। फ़िर बच्चों को पेंटिंग, शिल्पकारी, गायन, म्युज़िक औए प्रश्नावली जैसी गतिविधियां करवाई जाती थीं। आस–पास के गांवों के विभिन्न स्कूलों से लगभग 150 बच्चों ने इस शिविर में भाग लिया। बच्चों के द्वारा बनाई गई कृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई जिसे अभिभावकों ने खूब सराहा।

11 मई को शिविर का अंतिम दिन था। बेंगलूर के भाई प्रभाकर ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। मैसूर से भाई श्रीनिवास और स्कूल की प्राचार्या बहन रत्ना भट्टाचारजी समारोह के मुख्य अतिथि थे। संस्था के मुखिया, श्री के. बी. सोमशेखर ने अपने भाषण में कहा कि बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने का यही सही वक्त है जो आधुनिक तकनीक के प्रभाव के तले आज के समाज में कहीं खो गई है।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

किशोरों के लिये एक अवसर

अहमदाबाद

मूल्य अनुस्थापन की आवश्यकता को देखते हुए अहमदाबाद केन्द्र से 19 किशोरों ने 24 व 25 मई को स्थानीय आश्रम में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया। इस वर्कशाप का उद्देश्य सामूहिक शिक्षा और किशोरों द्वारा बहुमुखी किरदार निभाना था। किशोरों ने अपनी गतिविधियों की सूची तैयार की और स्वयं को भूमिकायें बांटी जैसे परचालन तंत्र (लॉजिसटिक्स), वित्त, मूल्यांकन तथा सूचना इत्यादि।

किशोरों ने नाटक के द्वारा वास्तविक जीवन की स्थितियों को दर्शाते हुए व्यक्ति के क्रोध, कुण्ठा और नकारात्मक भावों का प्रबंधन करने की आवश्यकता को इंगित किया। उनके द्वारा 10,000 रु. में महीने का बजट नियोजित करने का प्रयोग काफ़ी रोमांचकारी रहा। इस से उन्हें पैसे का मूल्य समझ में आया तथा माँ–बाप द्वारा लगाये गये अवरोधों का आंकलन करने का अवसर मिला और यह भी कि आवश्यकताओं और इच्छाओं में क्या फ़र्क है। नैतिकता, अनुशासन तथा सत्य जैसे विषयों पर चार्ट के द्वारा व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण दिये गये। एक सामूहिक खेल के माध्यम से जीवन की प्राथमिकताओं को दर्शाया गया।

डा. जितेन्द्र जेटवा ने स्मरण–शक्ति को बढ़ाने और भाई खार ने स्वयंसेवा की धारणा और उसके व्यावहारिक प्रदर्शन पर किशोरों के साथ बातचीत की। इसके उपरांत किशोरों ने विभिन्न प्रकार के कार्य किये। भाई सुरेश राजगोपालन ने चरित्र निर्माण में अंतर्निहित मूल्य और व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव लाने में मिशन की प्रार्थना की उपयोगिता पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

किशोरों ने अभिभावकों के दबाव के बिना चयन की आज़ादी की आवश्यकता के बारे में स्पष्ट किया जिससे आयोजक इस सोच में पड़ गये कि क्या अभिभावकों के लिये भी ऐसी ही एक कार्यशाला आयोजित की जाये !

सहज कैंप, हैदराबाद

टुमकुंटा के ज़ोनल आश्रम में 9 से 17 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये 9 मई से 11 मई तक एक सहज कैंप का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों को खेलों से लेकर मूल्य आधारित व विचार–प्रेरक चर्चा सत्र में भाग लेते तथा पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ते पाया गया। गर्मी के कारण दोपहर को अंदर ही खेल व अन्य गतिविधियां जैसे शतरंज, कैरम, ओरिगेमी और वैदिक मैथ्स इत्यादि करवाई जातीं और शाम को बाहर की गतिविधियां कराई जाती। बड़े बच्चों ने स्पष्ट रूप से खेलों में रूचि दिखाई तथा छोटे बच्चों ने सभी प्रकार की आमोदजनक गतिविधियों का आनंद लिया। बच्चों को शनिवार शाम को और रविवार सुबह फ़िल्म भी दिखाई गई। बच्चों को बिना किसी हिचकिचाहट के पूरी स्वतंत्रता के साथ टिप्पणी करने और अपने सुझाव देने के लिये प्रोत्साहित किया गया।

इंदौर

18 मई 2008 को युवाओं के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य विशिष्ट रूप से मिशन के साहित्य में छिपे अनंत ज्ञान रूपी खज़ाने के बारे में अवगत करवाना था। इस कार्यक्रम के लिये तैयारी तीन सप्ताह पहले से शुरु हो गई जिसमें 25 युवकों ने भाग लेने के लिये रूचि दिखाई। उनको चार समूहों में बांटा गया– प्रेम, वैराग्य, ज्ञान और भक्ति। प्रत्येक समूह को प्रस्तुतिकरण तैयार करने के लिये एक पुस्तक पढ़ने के लिये दी गई। समूहों का आयोजन भाई सुरेन्द्र त्रिपाठी, भाई भूपेन्द्र भाटोर, भाई सचिन खंडेकर और भाई अमित भाटोर ने किया। मार्गदर्शन के लिये हरेक ग्रुप में एक वरिष्ठ अभ्यासी था। भाई राजेश रावेरकर ने कार्यक्रम के संयोजक भाई रमाकांत अग्रवाल के साथ कार्यक्रम का संचालन किया।

यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि एक ही पुस्तक से इतने संदेश मिल सकते हैं तथा इसे कितने अलग–अलग दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। अलग–अलग धारणाये व विचार प्रकट किये जा सकते हैं। हमने यह महसूस किया कि मालिक की कृपा से एक दिन हम पहले से निर्धारित निजी विचारों से मुक्त हो कर सही ढ़ंग से समझ पाएंगे कि मालिक हमें इन ईश्वरीय लेखनियों के द्वारा क्या बतलाना चाहते हैं।

बच्चों के केन्द्र, जयपुर द्वारा कार्य निष्पादन

11 मई को 3 से 17 वर्ष की आयु के 40 बच्चों ने अपनी प्रतिभाएं दिखाते हुए अभ्यासियों के समक्ष मूल्य आधारित कहानियां, कवितायें और गीत प्रस्तुत किये जो मालिक के प्रति प्रेम जागृत कर रहे थे। दो नाटक भी प्रस्तुत किये गये जिनका संदेश था – "धर्म बांटता है तथा आध्यात्मिकता जोड़ती है" और "ईश्वर सभी जगह विद्यमान है"। बच्चे इस कार्यक्रम के लिये बहुत दिनों से प्रत्येक रविवार को आश्रम में अभ्यास कर रहे थे।

बच्चों के प्रस्तुतिकरण से उत्साहित हो कर कुछ युवा अभ्यासी भी सामूहिक गायन में शामिल हो गये। सत्र के दौरान मालिक की उपस्थिति पूर्ण रूप से महसूस की जा सकती थी। बच्चों का इस प्रकार मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाना उनके लिये एक बहुत खूबसूरत अनुभव था तथा अभ्यासियों के लिये भी बच्चों को मालिक के प्रेम व संरक्षण में बढ़ते देखना एक सुखद अनुभव था।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

जुलाई २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–४

प्रकाश के केन्द्र

एक और हिमालय द्वार – पिथोरागड़

"मैंने एक आश्रम को प्रकाश का केन्द्र कहा है। एक पुरानी परम्परा है कि ईश्वर की सहमति से, सही समय आने पर, आलौकिक संसार के लिये कुछ द्वार खुल जाते हैं। पहला द्वार, यकीनन, उस महान विशिष्ट व्यक्तित्व का इस संसार में आना जो यह द्वार स्थापित करने के लिये आता है। वह शिक्षा देता है। वह सन्देश देता है। वह बुलावा देता है। और लोगों को लाने के लिये तथा एक जगह पर इकट्ठा करने के लिये, जहाँ से वो उड़ान भर सकें, हम आश्रमों का निर्माण करते हैं। बिल्कुल सही मायनों में यह उस आलौकिक संसार तक जाने के लिये एक मुख्य द्वार है, बशर्ते इसका सही इस्तेमाल किया जाये।" ऐसा हमारे गुरुदेव ने 19 दिसम्बर 2004 को पिथोरागड़ आश्रम का उद्घाटन करते समय कहा।

यह आश्रम पिथोरागड़ जिले में, सतकोल आश्रम से 150 किलोमीटर दूर, उत्तर पूर्व दिशा में 5400 फ़ुट की ऊँचाई पर स्थित है। मालिक के द्वारा स्वयं डिज़ाइन किया गया यह आश्रम बिल्कुल सीप में मोती जैसा प्रतीत होता है जो हिमायल की पहाड़ियों में स्थित है, जिसके पूर्व में नेपाल तथा उत्तर में तिब्बत है। लगभग 500 लोगों के बैठने के लिये ध्यान–कक्ष के अलावा और भी सुविधायें हैं जैसे मालिक की कॉटेज, रसोई घर तथा एक कमरा।

आश्रम का निर्माण अपने आप मे एक गाथा है क्योंकि भवन निर्माण का सारा सामान 150 कि.मी. तक ऊपर लाना पड़ा। निर्माण कार्य अप्रैल 2004 में शुरु हुआ और पूज्य मालिक की कृपा से नौ महीने से भी कम समय मे पूर्ण हो गया जोकि अपने आप में एक रिकार्ड है। अभी तक वहाँ कोई डॉरमिटरी नहीं बनी है इसी कारणवश मालिक ने अभ्यासियों को बिना अग्रिम अनुमति के वहाँ आने की इजाज़त नहीं दी है।

To subscribe to this Newsletter please visit http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp
For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2008 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This message may be edited for content and is intended exclusively for the members of SRCM.